tion of private savings, long term borrowings from public financing institutions and also assistance from international agencies. Negotiations for loan assistance from Life Insurance Corporation, Unit Trust of India and nationalised banks are under way. As these negotiations have not yet been completed, the Corporation has not been able to sanction loans to finance any schemes.

(c) No, Sir.

SHRI P. GANGADEB: Which are the States where there will be centrally sponsored projects and what will be the initial capital investment?

SHRI I. K. GUJRAL: So far as the submission of schemes is concerned, it is a reasonably long list starting with Andhra, Gujarat etc. About 15 States have submitted 129 schemes involving over Rs. 500 crores.

SHRI P. GANGADEB: Since I am interested in Orissa, may I know if the financial and technical directors have visited Orissa and selected sites and, if so, which are they? If not, what are the reasons therefor?

SHRI I. K. GUJRAL: Orissa have submitted four schemes and they are under examination. No final conclusions have been reached. So far as physical visits are concerned, I am not in a position to confirm at this stage whether any experts are going there or not.

SHRI K. S. CHAVDA: May I know the rate of interest charged by the Housing Corporation on the loans?

SHRI I. K. GUJRAL: The interest varies depending on the social content of the scheme. For instance, out of the five schemes tentatively approved, there is a scheme in Bombay where the rate of interest is 6½ per cent and another with 7½ per cent. Those schemes which have more social content in the sense of providing housing for slum clearance and for people who are living in adverse housing situation the rate of interest will be lower.

मलेरिया उन्मूलन योजना की असफलता

*453. **श्री अटल बिहारी वाजपेयी** : क्या **स्वास्थ्य और परिवार नियोजन** मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या देश में मलेरिया फिर से फैल रहा है और इसका उन्मूलन करने हेतु सरकार द्वारा किए गए सभी उपाय असफल रहे हैं; और

(ख) यदि हां, तो इसके क्या कारण हैं ?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY PLANNING (SHRI D. P. CHATTOPADHYAYA): (a) No, Sir.

(b) Do not arise.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मंत्री जी ने मलेरिया उन्मूलन अभियान की विफलता के सम्बन्ध में क्या पब्लिक एकाउन्ट्स कमेटी की 101वीं रिपोर्ट देखी है जिसमें सरकारी अधिकारियों ने कमेटी के सामने यह स्वीकार किया था कि मलेरिया का प्रकोप फिर से हो रहा है और सरकार उसको रोकने में सफल नहीं हो पा रही है। मुझे ताज्जुब है जिन मन्त्री महोदय ने जवाब दिया है, उनको स्थिति के बारे में जानकारी है या नहीं है ?

अध्यक्ष महोदय : कौन से साल की ?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : पिछले साल की रिपोर्ट है।

निर्माण और आवास तथा स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मन्त्री **(श्री उमा शंकर दीक्षित)** : जो प्रश्न था वह इतने व्यापक शब्दों में किया गया था कि 'न' के सिवाय कोई दूसरा उत्तर उसका सम्भव नहीं था। माननीय सदस्य देखें प्रश्न क्या था। Whether malaria is again spreading in the country and all the measures taken by government to eradicate it have failed. It is not spreading all over. What has happened is this. These measures were started in 1952. In 1958 a crash programme was undertaken and within a few years, by 1965 malaria was virtually eliminated, though not completely because total elimination is not possible of any disease. From 75 million cases the number came down to 0.15 million. Even last year the number is less than half a million. But from 1969-70 the incidence has increased and this is causing anxiety. Adequate measures are being taken.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अभी मन्त्री महोदय ने कहा है कि मेरा प्रश्न बड़ा व्यापक है । क्या वह परमात्मा जैसा व्यापक था कि उसका नेति नेति में ही उत्तर देना होगा, नहीं में ही उत्तर देना होगा ? यह तो मैंने उनके प्रश्न का जवाब दिया है, अब मैं प्रश्न पूछता हूं । जो मंत्रालय के एडीशनल सेक्रेटरी पी० ए० सी० के सामने आए और जिन का बयान छपा हुआ है और जो जनता की सम्पत्ति है, उसका एक अंश मैं मंत्री महोदय के ध्यान में लाना चाहता हूं :

> "There were certain administrative weaknesses in the States. Recently our team visited three or four States. They have been experiencing difficulties about staff, transport, supply and other things. Lastly, there has been difficulties about the behaviour of mosquitos themselves."

मैं जानना चाहता हूं कि इसका क्या इलाज किया गया है । समय पर दवाइयां नहीं मिलती हैं, दवाइयों के लिये गाड़ियां नहीं है, स्टाफ नहीं है । चौथे प्लान में आउटले तो बढ़ा दिया गया है लेकिन राज्य सरकारें उसको ठीक तरह से खर्च कर सकें, इसका मंत्रालय ने क्या प्रबन्ध किया है ?

श्री उमा शंकर दीक्षित : मुख्यत: चार राज्यों में यह प्रश्न उठा है । जिन राज्यों में ज्यादा स्थिति बिगड़ी है और स्थिति अधिक शोचनीय हुई है वे हैं राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश । माननीय सदस्य जानते ही हैं कि हम कोई एहकाम निकाल कर काम नहीं करते हैं और न कर सकते हैं । उनसे यह बात उठाई गई है । सेंट्रल स्पांसर्ड स्कीम्ज़ ली जाएंगी । वित्तीय सहायता सम्पूर्ण केन्द्र अपने ऊपर उठाएगा । कोई कारण नहीं है कि ये जो राज्य हैं, इसको न करें, इसके बारे में व्यवस्था न करें । इन राज्यों में जो एक कंसालिडेशन और मेंटेनेंस स्टेज थी उस पर से हटकर अटैक स्टेज में आ गए हैं जो 1958 में थी । मुझे तनिक सन्देह नहीं है कि जो राज्य हैं वे भी बहुत चिन्तित हैं और इसमें वे पूरा सहयोग देंगे ।

श्री अचल सिंह : दिल्ली भारत की राजधानी है । उसमें भी मच्छर काफी बढ़ रहे हैं और बहुत मुश्किल पैदा कर रहे हैं । इसके लिए आपने क्या किया है ?

श्री उमा शंकर दीक्षित : जहां तक दिल्ली का सम्बन्ध है परिस्थिति में प्रतिकूल दिशा में परिवर्तन हुआ है । लेकिन हमने 1971-72 के लिए वित्त की व्यवस्था की है । सीधा भी हम प्रबन्ध कर रहे हैं ।

श्री अमर नाथ चावला : क्या यह हकीकत है कि 1965 से लेकर 1969 तक दिल्ली में एक भी केस मलेरिया का नहीं हुआ था ? उसके बाद सैनिटरी कंडिशंज़ डिटिरियोरेट होने की वजह से ये केसिस होने शुरू हो गए हैं, क्या यह सही है ?

श्री उमा शंकर दीक्षित : रूरल एरियाज़ में कुछ तो जरूर सैनिटरी कंडिशंज़ इसके लिए जिम्मेदार हैं । मुख्यतया इस तरह की बात है कि जो स्प्रेइंग वगैरह की व्यवस्था है वह पर्याप्त नहीं है । कहीं कहीं जिन गांवों के लोगों ने पुल वगैरह बना लिए हैं वहां पर मच्छरों की बढ़ती हुई संख्या के कारण यह कठिनाई उत्पन्न हुई है ।

श्री प्रबोध चन्द्र : क्या मन्त्री महोदय के नोटिस में ऐसी शिकायत आई हैं कि जो बहुत सा रुपया मलेरिया के इरेडिकेशन के लिए इयरमार्क्ड था, या लोकेलेटीज़ में स्प्रे करने के लिए दिया गया था, वह दिल्ली और कई दूसरे राज्यों में खर्च नहीं किया गया और दूसरे कामों में लगा दिया गया ?

श्री उमा शंकर दीक्षित : जी नहीं ।

DR. RANEN SEN: It was reported in Calcutta newspapers that antimalaria campaign that was started in Calcutta has failed due to the immunisation of mosquitos against DDT. May I know whether any research has been done in this regard?

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: It is a fact that constant use of DDT has immunised a certain residual portion of mosquitos and

that leads to malaria. But it is not such a material factor that the disease cannot be attacked and controlled.

श्री हुकम चन्द कछवाय : अभी प्रश्न के उत्तर में मन्त्री महोदय ने बताया है कि मच्छरों के व्यवहार में परिवर्तन हो गया है। मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या मच्छर बदल गये हैं या सरकार में परिवर्तन होने के कारण मच्छरों के व्यवहार में परिवर्तन हो गया है।

श्री उमा शंकर दीक्षित : माननीय सदस्य यह बात तो पब्लिक एकाउन्ट्स कमेटी के सदस्यों से पूछें, जिन्हें यह बात बताई गई थी।

Sino-Indian Relations on Bangla Desh Issue

*456. SHRI S. M. BANERJEE: Will the Minister of EXTERNAL AFFAIRS be pleased to state:

(a) whether during West Pakistani onslaught in Bangla Desh. Chinese attitude towards India was extremely bad; and

(b) if so, whether India protested against this sort of unfriendly attitude?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI SURENDRA PAL SINGH): (a) Chinese attitude, during West Pakistan's brutal attack on East Bengal, remained hostile to India.

(b) There was no point in protesting to China on such questions. Protest has a meaning when it is likely to affect the attitude of that country. However, our views on the situation in East Bengal were conveyed to the Chinese Embassy in New Delhi.

SHRI S. M. BANERJEE: It is surprising that the hon. Minister says protests have no meaning. But we are having diplomatic relations with China. It is known to us that four divisions of army which the Yahya Government has deployed in East Bengal is equipped with modern and sophisticated weapons supplied by the Government of China. It is surprising that instead of supporting the liberation army, they are supporting the military rule and military dictatorship in Pakistan. When the Prime Minister wrote a letter to all the heads of countries, may I know whether this letter was also sent to China and, if so, what is the reaction of China thereto?

SHRI SURENDRA PAL SINGH: It is not only surprising but shocking that instead of supporting the liberation movement, China should go and support the military regime in Pakistan which is suppressing the freedom movement in Bangla Desh. But this is a fact of life. We all know that they are supporting the Yahya regime and they are supplying sophisticated arms to them. As regards the letter, as far as my information goes, no letter was sent to China. But our views were conveyed to the Chinese Government both in Peking as well as here.

SHRI S. M. BANERJEE: After this genocide in Bangla Desh, may I know whether it is a fact that instead of helping the liberation movement, to bully the Government of India for helping the people of Bangla Desh in the matter of rehabilitation, there is a concentration of Chinese forces on our borders, specially on our eastern border, and, if so, whether the Government of India have taken adequate steps to meet that challenge if it comes?

SHRI SURENDRA PAL SINGH: It is a fact that China is supporting the Yahya regime against the liberation movement of the Bangla Desh and they have gone so far to say that, if there is an aggression against Pakistan by India, China will go to the help of Pakistan. As regards concentration of forces, etc., that is something about which the Government of India is well aware and our Defence Ministry takes note of it. They are fully prepared to meet any eventuality.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : पीकिंग स्थित हमारे प्रतिनिधि जब राष्ट्रपति माओ-त्से-तुंग से मिले थे, तो माओ-त्से-तुंग कुछ मुसकराये थे, जिसके आधार पर भारत सरकार ने समझा था कि कम्युनिस्ट चीन का रुख भारत के प्रति नर्म पड़ रहा है। लेकिन अब बंगला देश के बारे में कम्युनिस्ट चीन की नीति को देखते हुए भारत सरकार का दृष्टिकोण क्या है---क्या भारत के प्रति कम्युनिस्ट चीन का रुख वही है, या उसमें कुछ परिवर्तन हो रहा है ?

श्री सुरेन्द्रपाल सिंह : जब हमारे सी० डी०